

स्वरशून्य वि. (तत्.) जिसमें (ध्वनि) संगीतात्मकता, लय एवं माधुर्य का अभाव हो।

स्वरसंक्रम पुं. (तत्.) संगीत में स्वरों का संक्रमण, आरोह-अवरोह, उतार-चढ़ाव।

स्वरसंगति स्त्री. (तत्.) संगी. सुरों का परस्पर अनुकूल मेल।

स्वरसंधि स्त्री. (तत्.) 1. व्याकरण या भाषाविज्ञान की दृष्टि में दो या अधिक स्वरों का पास में आकर मिलकर एक हो जाना, स्वरों का आपस में मेल 2. स्वरांत और स्वरादि पदों में होने वाली संधि।

स्वर संपन्न वि. (तत्.) संगी. 1. सुरीला 2. जिसमें स्वरों का सुंदर मेल हो।

स्वर संयोग पुं. (तत्.) 1. स्वरवर्णों का उचित मेल 2. स्वर वर्णों की समीपता।

स्वरस पुं. (तत्.) 1. पत्तियों आदि को पानी के साथ कूट-पीसकर तथा उसे छान कर निकाला गया रस 2. किसी चीज का अपना प्राकृतिक रस 3. अपना तात्पर्य या अभिप्राय 4. अपने लोगों के प्रति होने वाली सहज भावना।

स्वरसप्तक पुं. (तत्.) संगीत के सात स्वरों (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) का समूह, सरगम।

स्वरसमुद्र पुं. (तत्.) प्राचीनकाल का एक वाद्ययंत्र, बाजा जिसे बजाने के लिए उसमें तार लगे होते थे।

स्वरसादि पुं. (तत्.) औषधियों को गर्म पानी में औटाकर बनाया गया एक प्रकार का काढ़ा, कषाय।

स्वर-साधन पुं. (तत्.) स्वर-साधना में स्वर बार-बार कंठ से उच्चारण करते हुए उसे ठीक तरह से निकालने की क्रिया या भाव।

स्वरसूत्र पुं. (तत्.) कंठ और छाती के अंदर पाया जाने वाला सूत्र के आकार का एक अंग जिसकी सहायता से स्वर या आवाज निकलती है। vocal cord

स्वरांकन पुं. (तत्.) संगी. स्वरलिपि। notation

स्वरांत वि. (तत्.) 1. वह शब्द जिसके अंत में स्वर वर्ण हो जैसे- बाला, नदी, प्रभु आदि 2. जिसका अंतिम अक्षर स्वरित हो।

स्वरांतर पुं. (तत्.) भाषा. व्या. दो स्वरों के मध्य का अवकाश।

स्वरांश पुं. (तत्.) संगीत में स्वर का कोई अंश, स्वर का आधा या चौथाई अंश।

स्वरा स्त्री. (तत्.) ब्रह्मा की बड़ी पत्नी तथा जिसे गायत्री की सपत्नी कहा गया है।

स्वरागम पुं. (तत्.) भाषा. ध्वनि परिवर्तन के अनुसार शब्द के आदि, मध्य या अंत में किसी स्वर का आकर जुड़ जाना जैसे- कर्म से 'करम' हो जाना। अर्थात्- क्+अ+र्+म्+अ=में र् और मृ के मध्य, 'अ' स्वर का आकर जुड़ जाना।

स्वराघात पुं. (तत्.) व्या. 1. भाषा में किसी शब्द के उच्चारण में उसके आदि अक्षर (स्वर या व्यंजन) पर दिया जाने वाला बल, बलाघात टि. वैदिक मंत्रों के उच्चारण 'उदात्त' ध्वनि स्वराघात ही होती है।

स्वराज पुं. (तत्.) 1. अपना राज्य 2. स्वतंत्रता 3. वह अधिकार जहाँ किसी अन्य की दखलंदाजी न हो।

स्वराजी वि. (तत्.) जो 'स्वराज्य' नामक राजनीतिक दल का सदस्य हो, स्वराज्य संबंधी, स्वराज्य का।

स्वराज्य पुं. (तत्.) 1. वह अवस्था जब स्वदेश की शासन-सत्ता विदेशी शासकों के द्वारा स्वदेशवासियों को प्राप्त हो चुकी होती है।

स्वराट् वि. (तत्.) जो स्वयं प्रकाश से प्रकाशमान होकर दूसरों को प्रकाशित करता हो पुं. 1. ब्रह्म, ईश्वर 2. वह राजा जिसने अपने राज्य में स्वराज्य शासन प्रणाली स्थापित की हो 3. एक वैदिक छंद जिसमें सभी पादों में मिलकर नियमित रूप से कुल दो वर्ण कम हो।

स्वरापगा स्त्री. (तत्.) स्वर्गलोक से मृत्युलोक में जाने वाली, आकाश गंगा, मंदाकिनी।